छाया मत छूना

2016

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 1.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं, सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी,
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण—
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'छाया मत छूना'– कवि ने ऐसा क्यों कहा?

(ख) 'छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी' का क्या तात्पर्य है?

(ग) 'कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी' में कवि को कौन-सी यादें कचोटती हैं?

Answer:

(क) कवि गिरिजा कुमाार माथुर के अनुसार 'छाया' से तात्पर्य भूतकाल के सुखी समय से है। कवि उसे छूने से इसलिए मना करता है क्योंकि वर्तमान समय में बीते सुखों को याद करने से कोई लाभ नहीं होता है। बीता अच्छा समय वर्तमान के दुखों को को दूर करने में असमर्थ होता है। अतः हमें अपने वर्तमान को सुखी बनाने के लिए बीते अच्छे दिनों को याद नहीं करना चाहिए। विगत लौटकर वापस नहीं आता और न ही वह वर्तमान परिस्थितियाँ बदल सकता है।

(ख) कवि गिरिजा कुमाार माथुर द्वारा रचित कविता 'छाया मत छूना' की इस पंक्ति का तात्पर्य है कि जीवन में बीते समय की सुगंध फैली रहती है। विगत में प्रिय मिलन की यादें मन को लुभाती हैं और उसकी देह की गंध ही वर्तमान में शेष रह जाती है।

(ग) 'कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी' में कवि को अपनी प्रेयसी के बालों में लगे सुमन-गुच्छ याद आते हैं, यही यादें चाँदनी बनकर उसके मन को उलझा कर रखती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 2.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'मृगतृष्णा' से क्या अभिप्राय है, यहाँ मृगतृष्णा किसे कहा गया है?

(ख) 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है'–इस पंक्ति से कवि किस तथ्य से अवगत करवाना चाहता है?

(ग) 'छाया' से कवि का क्या तात्पर्य है?

Answer:

(क) मृगतृष्णा अर्थात हिरन की ऐसी प्यास जो पानी की चाह में उसे भगाती रहती है। रेगिस्तान में रेत पर जब सूर्य की तेज़ किरणें पड़ती हैं, तो पानी होने का भ्रम पैदा करती हैं और हिरन उसी को पाने के लिए दौड़ लगाता है।

कविता में इसका प्रयोग कवि द्वारा भौतिक वस्तुओं व सुखों के पीछे भागने से है। पूँजी व धन की प्राप्ति उसे भ्रमित करती रही। यश, वैभव व सम्मान पाने के लिए वह भटकता रहा पर इनकी प्राप्ति मृगतृष्णा ही साबित हुई।

(ख) इस पंक्ति द्वारा कवि गिरिजा कुमार माथुर बताना चाहते हैं कि हर चाँदनी रात के दामन में एक काली रात छिपी है। कवि का चाँदनी से अभिप्रायः सुखों से है और काली रात दुखों का प्रतीक है। जीवन सुख-दुख का सागर है। एक के बाद दूसरे का आना निश्चित होता है। अतः दोनों को समान रूप से ग्रहण करना चाहिए।

(ग) 'छाया' से कवि का तात्पर्य विगत समय की बीती हुई सुखद यादों से है। ये सुखद यादें छाया के समान मानव के मन-मस्तिक को वर्तमान में भी झिंझोड़ती रहती हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 3.

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना,
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'देह सुखी होने पर भी मन के दुख का अंत नहीं'–कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ख) दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
उक्ति पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है?

(ग) कवि छाया छूने से मना क्यों कर रहा है?

Answer:

(क) 'देह सुखी होने पर भी मन के दुख का अंत नहीं' कथन के द्वारा कवि हमें अतीत की यादों से मिलने वाली पीड़ा की ओर ध्यान दिलवाना चाहते हैं। उनका मानना है कि अतीत की सुखद यादों से मन को पीड़ा मिलती है और व्यक्ति के पास सुख-सुविधाएँ होने पर भी केवल शारीरिक सुख तो प्राप्त हो जाता है, किंतु मन में अतीत की सुखद स्मृतियाँ पीड़ा बनकर चुभती रहती हैं, जिनका अंत दिखाई नहीं देता।

(ख) उपर्युक्त पंक्तियों में कवि यह कहना चाहता है कि जिस प्रकार शरद पूर्णिमा की रात को चाँद न निकले, तो शरद पूर्णिमा का संपूर्ण सौंदर्य अधूरा प्रतीत होता है, उसी प्रकार मनुष्य को जीवन में अपेक्षित सुख न मिलने पर उसका दुख उसे जीवन भर सताता है। जैसे वसंत ऋतु में फूल न खिले तो वह सुखदायी प्रतीत नहीं होती, वैसे ही मनुष्य अपने अतीत में जो चाहे और वह उसे न मिले तो उदासी उसके जीवन को घेर लेती है। अतीत की यादों से मिली यह उदासी वर्तमान का सुख भी छीन लेती है। इसलिए जीवन में सच्चे सुख के लिए अतीत की यादों को बिसराना ही बेहतर है।

(ग) 'छाया' शब्द से तात्पर्य अतीत की मधुर स्मृतियों से है, जो वर्तमान एवं भविष्य दोनों को प्रभावित कर देती हैं। ये मन में पीड़ा बनकर चुभती रहती हैं। इनका कहीं अंत दिखाई नहीं देता इसलिए इनमें उलझकर व्यक्ति सुख-संपत्ति के होते हुए भी मानसिक शांति से दूर हो जाता है। अतः दुविधाओं से दूर एक अच्छा व सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए कवि छाया छूने से मना कर रहा है।

2015

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 4.

'छाया मत छूना' में कवि 'छाया' किसे कहता है और क्यों?

Answer:

कवि गिरिजा कुमार माथुर 'छाया' विगत समय में बीती हुई स्मृतियों को कहते हैं, जो अनेक बार वर्तमान समय में भी मानव-मस्तिष्क में छाई रहती हैं। ये यादें ठीक परछाईं की तरह मानव का पीछा नहीं छोड़ती हैं। वर्तमान में भी मृग-मरीचिका की तरह भ्रमित करती हैं, इसलिए कवि ने इन्हें 'छाया' कहा है। ये स्मृतियाँ छाया की तरह मन में विचरित करती हुई वर्तमान जीवन को भी दुखी कर देती हैं।

Question 5.

कवि ने 'छाया मत छूना' कविता में कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों की है?

Answer:

कवि गिरिजा कुमार माथुर ने कविता 'छाया मत छूना' में यथार्थ को पूजने की बात इसलिए कही है क्योंकि वर्तमान समय में वास्तविकताओं का सामना करके ही हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। विगत स्मृतियों से चिपके रहना व्यर्थ है और वर्तमान से पलायन करके हम सुखी नहीं हो सकते। अतः वर्तमान समय में आने वाले कठोर यथार्थ का डटकर सामना करना ही हमारे जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए। यथार्थ को पूजकर ही हम सच्चाई का सामना कर सकते हैं और जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

Question 6.

'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं? 'छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

Answer:

गर्मियों में प्यास से व्याकुल मृग को रेगिस्तान में थोड़ी दूरी पर पानी होने का भ्रम होता है, किंतु पास जाने पर केवल रेत-ही-रेत दिखाई देता है और फिर वहाँ से आगे पानी होने का भ्रम होने लगता है। वह पानी के इस भ्रम को वास्तविक पानी समझकर उसे पाने के लिए भागता रहता है। उसकी इस स्थिति को ही 'मृगमरीचिका' या 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इस प्रकार प्रतीकात्मक अर्थ में 'मृगतृष्णा' मिथ्या भ्रम अथवा छलावे की स्थिति को कहा जा सकता है। 'छाया मत छूना' कविता में कवि कहना चाहता है कि जीवन में प्रभुता यानी बड़प्पन की अनुभूति भी एक प्रकार से भ्रम ही है क्योंकि व्यक्ति इसे पाने के लिए मान-सम्मान, धन-संपत्ति, पद-प्रतिष्ठा के लिए भागता रहता है और इसी भ्रम में वह पूरा जीवन छला जाता है और यह भ्रम उसे सुख नहीं, बल्कि दुख ही देता है।

Question 7.

'क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?'– का क्या भाव है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर' पंक्ति का भाव यह है कि जिस प्रकार बसंत ऋतु में फूल न खिले तो वह सुखदायी प्रतीत नहीं होती, वैसे ही मनुष्य अपने अतीत में जो चाहे और वह उसे न मिले तो उदासी उसके जीवन को घेर लेती है। अतीत की मधुरिम यादों से मिली यह उदासी वर्तमान व भविष्य का सुख भी छीन लेती है। इसलिए जीवन में सच्चे सुख के लिए अतीत की यादों को बिसराना ही उचित होता है।

Question 8.

मनुष्य अतीत में खोए रहने के कारण दुखी रहता है। आपके विचार में दुख के और क्या कारण हो सकते हैं?

Answer:

अतीत में खोए रहने के कारण दुखी रहना मानव प्रकृति है जो कि उचित नहीं है। उससे हम अपने वर्तमान व भविष्य को भी नहीं सँवार पाते। मानव के दुखी रहने के अन्य कारण भी हैं; जैसे—

(*i*) कठिन परिश्रम करने पर भी फल की प्राप्ति न होने पर मानव दुखी हो जाता है।

(*ii*) समय बीत जाने पर वस्तुओं की प्राप्ति भी मानव को दुखी कर देती है।

(*iii*) जब संकट के समय मित्र और रिश्तेदार साथ न निभाएँ।

(*iv*) प्रियजन के बिछड़ जाने पर भी मानव दुखी हो जाता है।

Question 9.

'मृगतृष्णा' से क्या तात्पर्य है? उसके पीछे क्यों नहीं भागना चाहिए?

Answer:

मृगतृष्णा शब्द का अर्थ है कि जिस प्रकार एक मृग रेगिस्तान में रेत पर तेज़ धूप पड़ने पर वहाँ पानी होने के भ्रम में उसके पीछे भागता है, पर वहाँ जाकर भी वह तृषित रहता है। उसके पीछे भागना व्यर्थ होता है, ठीक उसी प्रकार मानव को भी ऐसी मृगतृष्णा व कल्पनाओं के पीछे नहीं भागना चाहिए। जहाँ से उसे किसी सुख की प्राप्ति न हो। अतीत की सुखद या दुखद स्मृतियों के पीछे भागना ऐसी ही मृगतृष्णा है, जिससे मानव का न तो वर्तमान सुखी होता है और न ही भविष्य सुखी होता है। व्यक्ति को यथार्थ का सामना कर संघर्ष से सफलता व सुख की प्राप्ति करनी चाहिए।

2014

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 10.

'छाया मत छूना' कविता के आधार पर दुख के कारण बताइए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कवि 'गिरिजा कुमार माथुर' द्वारा रचित कविता 'छाया मत छूना' में दुख के निम्नलिखित कारण बताए हैं—

(*i*) व्यक्ति अतीत की यादों में खोया रहता है और वर्तमान के सुख तक नहीं भोग पाता है। बीती बातें बार-बार उसे याद आकर वर्तमान में सताती रहती हैं।

(*ii*) उसे अपने प्रिय मिलन की मीठी यादें आती हैं। उसकी देह गंध, और केशों के पुष्प-गुच्छ याद-आ-आकर सताते हैं।

(*iii*) धन-दौलत और वैभव सभी सुख मृगतृष्णा के समान उसे भरमाते रहते हैं।

(*iv*) उसे इस बात का भी दुख होता है कि उसकी इच्छाओं की पूर्ति कभी समय पर न हो पाई।

Question 11.

'छाया मत छूना' कविता में 'मृगतृष्णा' का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

Answer:

मृगतृष्णा अर्थात ऐसी इच्छा जो कभी पूरी न हो, जिसके पीछे व्यक्ति उस हिरन की तरह भागता रहता है जिसे रेगिस्तान में तेज़ धूप पड़ने के कारण रेत में पानी का भ्रम होता है। कविता में इसका प्रयोग कवि द्वारा भौतिक वस्तुओं व सुखों के पीछे भागने से है। पूँजी व धन की प्राप्ति कवि को भ्रमित करती है। यश, वैभव व सम्मान पाने के लिए वह भटकता रहा, पर इनकी प्राप्ति कवि के लिए मृगतृष्णा ही साबित हुई।

Question 12.

'छाया मत छूना' के कवि ने यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

Answer:

प्रश्न 5 का उत्तर देखें।

Question 13.

'छाया मत छूना' का कवि यथार्थ के पूजन की बात क्यों कहता है? उसकी दृष्टि में यथार्थ का स्वरूप क्या है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कविता 'छाया मत छूना' में कवि 'गिरिजा कुमार' यथार्थ के पूजन की बात इसलिए कहते हैं क्योंकि वर्तमान में यथार्थ का सामना करने से ही जीवन चलता है। अतीत की स्मृतियों में खोए रहने से जीवन में संघर्षों का सामना नहीं किया जा सकता। वर्तमान की समस्याओं का कठोरता और सत्यता से सामना करना चाहिए, न कि उनसे पलायन कर विगत में खोए रहना चाहिए। कवि की दृष्टि में कठिन यथार्थ से रूबरू होना ही जीवन की सच्चाई है। खुशी के साथ वर्तमान के सुख-दुख को अपनाना ही यथार्थ है। अतः अतीत को भूलकर वर्तमान व भविष्य को सुखद बनाने के लिए सामने आने वाली परिस्थितियों का सामना करना चाहिए।

Question 14.

'छाया' से क्या तात्पर्य है? कवि उसे छूने से मना क्यों करता है?

Answer:

कविता 'छाया मत छूना' में 'छाया' से तात्पर्य अतीत के उन सुखों से है जो कवि को कभी प्राप्त नहीं हुए। अप्राप्य के पीछे भागना और उसकी याद में खोए रहना व्यर्थ है। कवि उसे छूने से इसलिए भी मना करता है क्योंकि उनके बारे में सोचते रहने और दुखी रहने से वर्तमान में कुछ प्राप्त नहीं होगा, बल्कि मन और दुखी होगा। अतः अतीत को भूलकर वर्तमान में यथार्थ का सामना करके हम अपने जीवन में कर्मठता के द्वारा सुख पा सकते हैं। 'छाया' छूने से केवल मन भ्रमित होगा।

Question 15.

'जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी' से 'छाया मत छूना' कविता के कवि का अभिप्राय जीवन की किन मधुर स्मृतियों से है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी' से 'छाया मत छूना' कविता के कवि का अभिप्राय जीवन में अपनी प्रिया के साथ व्यतीत किए गए सुखद क्षणों से है। स्मृतियों में अपनी प्रेयसी के तन की सुगंध कवि के मन-तन दोनों को ही सराबोर कर देती है। चाँदनी रात में प्रेयसी के बालों में गुंथे पुष्पों की मनभावन सुगंध का स्मरण हो आता है। अतीत की ये स्मृतियाँ कभी वास्तव में मधुर रही होंगी, किंतु बिछोह की स्थिति में ये वर्तमान में पीड़ा ही भरने का कार्य करती हैं।

Question 16.

'छाया मत छूना' कविता का कवि कठिन यथार्थ के पूजन को श्रेयस्कर क्यों मानता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

कविता 'छाया मत छूना' में कवि गिरिजा कुमार जी यथार्थ के पूजन को इसलिए श्रेयस्कर मानते हैं क्योंकि यथार्थ का सामना करके ही व्यक्ति जीवन को सफल व सुखी बना सकता है। अतीत की स्मृतियों में खोए रहने से केवल दुख और पीड़ा का अहसास होता है। वर्तमान में यथार्थ में आने वाली कठिनाइयों का कठोरता से सामना व संघर्ष करके जीवन बेहतर हो सकता है। जो कल तक अप्राप्य था, वह प्राप्त नहीं हो सकता है। यथार्थ से पलायन कर विगत में खोए रहना हितकर नहीं है। यथार्थ से रूबरू होना ही जीवन का सत्य है। कल्पनाओं में जीना तो यथार्थ से मुँह छुपाने जैसा है। अतः वर्तमान में यथार्थ का साहस से सामना करना ही श्रेयस्कर है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 17.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि का साहस किस दुविधा से पीड़ित है?

(ख) 'दिखता है पंथ नहीं' का आशय समझाइए।

(ग) कवि को किस बात का दुख है?

(घ) 'क्या हुआ...' के रूप में कवि अपनी किस मानसिकता को व्यक्त कर रहा है?

(ङ) 'छाया' शब्द का अर्थ समझाइए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) कवि का साहस असमंजस की स्थिति से पीड़ित है, उसे सही-गलत, सफलता-असफलता, शुभ-अशुभ के भ्रम दुविधा में रखते हैं और वह सही कदम उठाने का साहस नहीं जुटा पाता।

(ख) 'दिखता है पंथ नहीं' का आशय है कि दुविधाग्रस्त होने के कारण उसे सही मार्ग दिखाई नहीं पड़ता। उसका शरीर तो सुखी है पर मन अतीत की अतृप्त वांछनाओं के कारण अत्यंत दुखी है।

(ग) कवि को इस बात का दुख है कि उसे समय रहते सुखों की प्राप्ति नहीं हुई। जिस प्रकार शरद काल आने पर भी चंद्रमा न दिखाई पड़े और वसंत बीत जाने पर फूल खिले तो क्या लाभ? ठीक उसी प्रकार कवि को अवसर आने पर भी प्रिया से मिलन न होने का दुख है।

(घ) 'क्या हुआ...' के रूप में कवि इस मानसिकता को व्यक्त कर रहा है कि समय बीत जाने के बाद प्राप्त सुख उसे उत्साहित नहीं कर रहे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वसंत बीत जाने के बाद फूल खिलता है। पर कवि को यह समझना होगा कि समय बीत जाने के बाद भी प्राप्त वस्तु से हमें खुश होना चाहिए।

(ङ) 'छाया' शब्द का अर्थ पुरानी स्मृतियों से है जो कवि को वर्तमान में भी दुखी कर रही हैं।

Question 18.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'छाया' शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है?

(ख) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ग) कविता की एक भाषागत विशेषता बताइए।

(घ) बीती यादों को कवि ने किन शब्दों से चित्रित किया है?

(ङ) 'क्षण' के लिए प्रयुक्त 'जीवित' विशेषण के सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) 'छाया' शब्द कविता में अतीत में बीती स्मृतियों के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

(ख) 'सुरंग सुधियाँ सुहावनी में 'स' की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

(ग) कविता की भाषा चित्रात्मक है व खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

(घ) बीती यादों को कवि ने 'छाया' और 'छवियों' शब्दों के रूप में चित्रित किया है।

(ङ) 'क्षण' विशेष्य के विशेषण 'जीवित' ने बीते हुए समय को पुनः सजीव कर दिया है।

2013

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 19.

'छाया मत छूना' कविता में दुख के क्या कारण बताए गए हैं?

Answer:

प्रश्न 10 का उत्तर देखें।

Question 20.

'छाया मत छूना' कविता के आधार पर मन के दुख को बढ़ाने वाले कारणों को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

Answer:

कविता 'छाया मत छूना' में मन के दुख को बढ़ाने वाले निम्नलिखित कारण हो सकते हैं–

(*i*) जब मानव अतीत की यादों में खोकर वर्तमान से पलायन करता है, तो मन का दुख बढ़ जाता है।

(*ii*) बीती स्मृतियाँ उसे बार-बार सताती हैं। अपने प्रिय-मिलन की मीठी यादें, उसकी देह गंध और केशों के पुष्प-गुच्छ याद-आ-आकर मन को दुखी कर जाते हैं।

(*iii*) धन, दौलत और वैभव उसे मृगतृष्णा के समान भरमाते हैं।

(*iv*) समय पर सभी सुखों की प्राप्ति न होने से भी मन दुखी रहता है।

Question 21.

'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' पंक्ति में कवि ने जीवन का कौन-सा यथार्थ प्रस्तुत किया है? व्यक्ति उस यथार्थ को कैसे झेल सकता है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' पंक्ति के माध्यम से कवि जीवन के उस यथार्थ को बताना चाहता है कि हर सुख में दुख छिपा है क्योंकि चंद्रिका सुखों का और कृष्णा दुखों का प्रतीक है। जिस प्रकार हर रात के बाद दिन आता है उसी प्रकार जीवन में सुख-दुख बारी-बारी से आते रहते हैं। व्यक्ति जीवन के यथार्थ अर्थात जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना धैर्य व साहस से कर सकता है। यथार्थ का सामना करके, उससे संघर्ष करके ही उसे पस्त किया जा सकता है। बीते दुख के दिनों को याद करने का कोई फ़ायदा नहीं। अतः यथार्थ का डट कर सामना करना चाहिए।

Question 22.

क्या प्रभुता की कामना केवल एक मृगतृष्णा है? इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

Answer:

कविता 'छाया मत छूना' में कवि ने प्रभुता की कामना को मृगतृष्णा के समान बताया है जो बिलकुल उचित है। मैं इसके पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत कर रही हूँ। प्रभुता, यानी सत्ता या बड़प्पन की लालसा के पीछे व्यक्ति दौड़ता रहता है। उसे पाने के लिए वह वर्तमान के सुख भी नहीं भोग पाता है। प्रभुता एक छलावे की तरह मानव को छलती रहती है। समय पर प्रभुता, धन, वैभव और इच्छित प्राप्त न होने पर मानव दुखी हो जाता है। केवल प्रभुता की कल्पना में खोए रहने से वह यथार्थ से दूर हो जाता है। जबकि जीवन में यथार्थ का सामना करके ही सुख मिलते हैं।

Question 23.

'छाया मत छूना' कविता की पंक्ति 'जितना ही दौड़ा तू, उतना ही भरमाया' का क्या आशय है?

Answer:

कविता 'छाया मत छूना' में कवि 'गिरिजा कुमार माथुर' द्वारा रचित ये पंक्ति 'जितना ही दौड़ा तू, उतना जितना ही अधिक धन, दौलत, सुख-ऐश्वर्य व मान-सम्मान पाने के लिए भाग-दौड़ करता है अर्थात प्रयत्न करता है उतना ही अधिक ये चीज़े उसे भरमाती हैं। मृगतृष्णा के समान उससे दूर भागती रहती हैं। ये मानव को जीवन पर्यंत छलती रहती हैं। कभी व्यक्ति इन्हें पाने के लिए दुखी रहता है और कभी इनके न मिलने पर दुखी रहता है। ये चीज़ें मानव को जीवन भर अपने पीछे दौड़ाती रहती हैं।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 24.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृग-तृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन।

(क) कविता के संदर्भ में छाया शब्द का अर्थ बताइए।
(ख) कवि को यश या वैभव के प्रति आसक्ति क्यों नहीं है?
(ग) 'प्रभुता' का आशय समझाइए।
(घ) 'चंद्रिका' और 'कृष्णा' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।
(ङ) 'यथार्थ पूजन' को कवि श्रेयस्कर क्यों मानता है?

Answer:

(क) 'छाया' शब्द का प्रयोग 'पुरानी स्मृतियों' के संदर्भ में हुआ है।

(ख) कवि को 'यश' या 'वैभव' के प्रति आसक्ति इसलिए नहीं है क्योंकि इन चीज़ों को पाने के लिए वह जितना दौड़ा, उतना ही उसे मृगतृष्णा के समान ये चीज़ें भरमाती रहीं, उससे दूर भागती रहीं।

(ग) 'प्रभुता' का आशय अपने बड़प्पन से है, जिसको पाने की लालसा एक मृगतृष्णा के समान है।

(घ) 'चंद्रिका' को खुशी के प्रतीक के रूप में और 'कृष्णा' को दुख का प्रतीक माना है। जिसका अर्थ है कि हर सुख में एक दुख छिपा होता है। जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं।

(ङ) 'यथार्थ पूजन' को कवि इसलिए श्रेयस्कर मानता है क्योंकि सच्चाई का सामना करने से ही खुशी और सफलता पाई जा सकती है। बीती बातों को याद करने से तो केवल दुख ही मिलते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 25.

निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना
जीवन में हैं सुरंग-सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी
तन-सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'छाया' शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ख) कवि के जीवन की सुरंग-सुधियाँ क्या हैं?

(ग) 'छवियों की चित्र-गंध' से कवि का क्या अभिप्राय है?

(घ) 'कुंतल' किसे कहते हैं? कविता में इसका प्रयोग किसकी ओर संकेत करता है?

(ङ) कविता में दुख के दूना होने का क्या कारण बताया गया है?

Answer:

(क) 'छाया' शब्द 'बीती स्मृतियों' के लिए किया गया है।

(ख) कवि के जीवन की सुंरग-सुधियाँ प्रिया मिलन की रंग-बिरंगी यादों से है जो सुहावनी प्रतीत होती हैं।

(ग) 'छवियों की चित्र-गंध' से तात्पर्य 'बीती स्मृतियों' के जो चित्र कवि को वर्तमान में याद आते हैं उनकी खुशबू अर्थात उनका अहसास कवि को भ्रमित करता रहता है।

(घ) 'कुंतल' लंबे केशों को कहते हैं। कविता में इसका प्रयोग कवि की अतीत की प्रेयसी के केशों के लिए किया है जिनके पुष्प-गुच्छ कवि को आज भी याद आते हैं।

(ङ) कविता में दुख के दूना होने का कारण बताया गया है कि जो क्षण बीत गए वे वापस तो आएँगे नहीं, दूसरे उनको स्मरण करने से दुख दुगुना हो जाएगा, कम नहीं होगा क्योंकि कवि को कभी इच्छित प्राप्त नहीं हुआ।

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 26.

'छाया मत छूना' कविता में दुख के कारण क्या बताए गए हैं?

Answer:

प्रश्न 10 का उत्तर देखें।

Question 27.

'छाया मत छूना' कविता में 'छाया' शब्द का क्या अर्थ है।

Answer:

प्रश्न 4 का उत्तर देखें।

Question 28.

'छाया मत छूना' कविता में 'मृगतृष्णा' किसे कहा गया है और क्यों?

Answer:

'छाया मत छूना' कविता में मृगतृष्णा का अर्थ है भ्रम, छलावा। अतीत की मधुर स्मृतियाँ मृगतृष्णा हैं, जो वर्तमान में अप्राप्य हैं उनके पीछे भागना एक छलावा है क्योंकि उन्हें पुनः प्राप्त करना असंभव है। इसी तरह मनुष्य यश, वैभव, मान-सम्मान के लिए भागता रहता है, किंतु वह केवल भ्रमित होकर भटकता ही रहता है। प्रभुता की कामना लिए जीवन भर भटकते रहना भी मृगतृष्णा है, जो प्राप्त नहीं होती क्योंकि मनुष्य अप्राप्य की कामना में ही जीवनभर भटकता रहता है।

Question 29.

'छाया मत छूना' गीत में कठिन यथार्थ को पूजने की बात क्यों कही गई है?

Answer:

प्रश्न 5 का उत्तर देखें।

Question 30.

'छाया मत छूना' कविता के आधार पर बताइए कि कवि अतीत को क्यों भुलाना चाहता है।

Answer:

'छाया मत छूना मन' कविता में कवि अतीत को इसलिए भुलाना चाहता है क्योंकि अतीत की सुखद स्मृतियों को यादकर वह अपने वर्तमान को दुखी एवं बोझिल नहीं बनाना चाहता। अतीत का सुख वर्तमान में दुख एवं पीड़ा ही देगा। उसके सहारे वर्तमान में जिया नहीं जा सकता। अतीत के सुखद पल उस छाया के समान हैं, जिनको छूने से दुःख और प्रबल होगा। वर्तमान में जीने के लिए यथार्थ को स्वीकार करना अत्यंत अनिवार्य है। वर्तमान में निराशा, असफलता एवं कष्ट से बचने के लिए यह अनिवार्य है कि अतीत को भुलाकर जीवन वर्तमान के ठोस धरातल पर जिया जाए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 31.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़ कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना ॥
जीवन में है सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।

(क) कविता में 'छवि' शब्द किस अर्थ के लिए प्रयुक्त हुआ है?

(ख) कवि के जीवन की सुरंग सुधियाँ क्या हैं?

(ग) 'कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी'– आशय समझाइए।

Answer:

(क) कविता में 'छवि' शब्द मनुष्य के बीते सुखमय दिनों की स्मृतियाँ हैं, जो मानस पटल पर गहराई से अंकित हैं। ये वे रंगीन यादें हैं, जो जाने-अनजाने में वर्तमान को महका जाती हैं। उन मधुर क्षणों की स्मृति 'छवि' के समान हृदय पर छा जाती हैं और सुखमय क्षणों का आनंद भर जाती हैं।

(ख) कवि के जीवन की सुरंग सुधियाँ वे रंगीन यादें हैं, जिन्हें याद कर कवि आनंद का अनुभव कर रहा है। ये वे रंग-बिरंगी स्मृतियाँ हैं, जिनका मोहक, आकर्षक रूप जीवन को महका जाता है।

(ग) 'कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी' पंक्ति का आशय है– कवि को चाँदनी को देखकर अपनी प्रिया की याद आ जाती है। जिसके बालों में सजे फूल सौंदर्य की सृष्टि करते थे। परंतु अब मधुर यादें ही शेष हैं, जो बार-बार उसके स्मृति पटल पर अंकित होती हैं एवं उसे कचोटती रहती हैं।

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 32.

'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

Answer:

प्रश्न 10 का उत्तर देखें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 33.

'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं? 'छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

Answer:

प्रश्न 6 का उत्तर देखें।

Question 34.

'छाया मत छूना' कविता में छाया शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

Answer:

प्रश्न 14 का उत्तर देखें।

Question 35.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि के 'भरमाने' का क्या कारण है?

(ख) 'प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) कविता में किस यथार्थ के पूजन की बात कही गई है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) यश, वैभव, ऐश्वर्य, सम्मान और पूँजी इनमें से कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है। मनुष्य इनके पीछे जितना भागता है, उतना ही भ्रमित होकर भटकता रहता है। इन सबके पीछे 'भ्रमित' होने का कारण यह है कि मनुष्य इन्हें ही जीवन का वास्तविक सत्य समझने लगता है और यही उसे जीवन के मूल आधार लगने लगते हैं।

(ख) 'प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है'– पंक्ति के द्वारा कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि मनुष्य प्रभुता पाने की कामना में जीवन भर भागता रहता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार प्यास से त्रस्त हिरण रेगिस्तान में जल का आभास होने पर उस ओर भागता है, परंतु उसे कुछ भी प्राप्त नहीं होता। मनुष्य भी बड़प्पन की अनुभूति की मृग-मरीचिका में भटकता रहता है, परंतु उसके हाथ कुछ भी नहीं आता है।

(ग) कविता में वर्तमान से जुड़े वास्तविक सत्य के यथार्थ पूजन की बात कही है क्योंकि व्यक्ति वर्तमान से दूर नहीं भाग सकता। उसे वर्तमान में ही जीना पड़ता है। अतीत की मधुर यादें एवं भविष्य के मोहक सपने कुछ समय के लिए हमारा साथ दे सकते हैं, परंतु अंततः हमें यथार्थ के धरातल पर लौटना ही पड़ता है।

Question 36.

निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दुविधा-हत साहस है, दिखता है पंथ नहीं,
देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं।
दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर,
क्या हुआ जो खिला फूल रस-बसंत जाने पर?
जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य-वरण,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) कवि के अनुसार जीवन-मार्ग दिखाई न पड़ने के कारण क्या हैं?

(ख) 'दुख है न चाँद खिला शरद-रात आने पर' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) वसंत के बीत जाने पर खिलने वाले फूल से क्या प्रेरणा ली जा सकती है?

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(क) दुविधाओं के कारण कवि को जीवन-मार्ग दिखाई नहीं देता। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है। दुविधात्मक स्थिति के कारण साहस होने पर भी उसमें निर्णय क्षमता नहीं रह पाती। सफलता-असफलता की आशंका सदैव उसके मन में बनी रहती है। वह संत्रस्त रहता है। हतोत्साहित मनः स्थिति के कारण उसे अपना गंतव्य दिखाई नहीं देता।

(ख) 'दुख है न चाँद खिला शरत-रात आने पर'– काव्य की इस पंक्ति के द्वारा कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि मनुष्य के लिए वह स्थिति अधिक दुखद एवं कष्टपूर्ण होती हैं जब शरद रात्रि होने पर भी चाँद न खिले, उसकी चाँदनी न छिटके अर्थात सुख का अवसर होने पर भी सुख से वंचित रहना पड़े। जब शारीरिक रूप से सुख की प्राप्ति हो और मन दुःख से परिपूर्ण हो। शारीरिक सामर्थ्य होते हुए भी मानसिक दुर्बलता बनी रहे। इन सबके मूल में दुविधाग्रस्त स्थिति प्रमुख है क्योंकि इसी के कारण मनुष्य हतप्रभ रहता है, और निर्णय न ले पाने की क्षमता उसे दुखी करती है।

(ग) वसंत के बीत जाने पर खिलने वाले फूल से हमें यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमें सदैव समय के महत्त्व को समझना चाहिए क्योंकि उचित अवसर पर सफलता न मिल पाने के कारण, असमय सफलता मिलने पर भी मन उतना प्रसन्न नहीं होता, जितना समयानुसार सफलता प्राप्त करने पर प्रसन्नता मिलती है? समय के अनुसार ही वस्तु का विशेष महत्त्व होता है। इसलिए जो प्राप्त नहीं हुआ, उसका दुःख भूलकर मनुष्य को वर्तमान के सत्य को स्वीकारते हुए जीवन जीना चाहिए एवं भविष्य को सँवारना चाहिए।

2010

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 37.

'छाया मत छूना' कविता में कौन-कौन-सी बातें दुख का कारण बताई गई हैं?

Answer:

'छाया मत छूना' कविता में दुखों का कारण पुरानी यादों और बड़ी-बड़ी कल्पना वाले स्वप्नों को बताया गया है। पुरानी सुधियाँ हमें बिछुड़े और गए हुए लोगों की याद दिला देती हैं। वे कभी वापस तो नहीं आते, परंतु उनके कारण पुराने घाव हरे हो जाते हैं। हम अवसाद से घिर जाते हैं। स्वप्न भी यदि पूरे न हों, तो दुख का कारण बनते हैं। अतः इनको छूने से बचना चाहिए अर्थात याद नहीं करना चाहिए।

Question 38.

'छाया मत छूना' कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

प्रश्न 11 का उत्तर देखें।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 39.

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लीखिए–

यश है या न वैभव है, मान है, न सरमाया;
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिम्ब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–

(क) कवि को सांसारिक उपलब्धि और समृद्धि से विरक्ति क्यों हो गई है?

(ख) 'प्रभुता का शरण-बिम्ब केवल मृगतृष्णा है' काव्यांश का आशय समझाइए।

(ग) 'चंद्रिका' और 'रात कृष्णा' किस अर्थ के व्यंजक हैं?

Answer:

(क) कवि को सांसारिक उपलब्धि और समृद्धि से विरक्ति इसलिए हो गई है क्योंकि ये सब मिथ्या हैं और इन सब के पीछे कोई-न-कोई दुख छुपा हुआ है। अतः कवि यथार्थ को पूजने को कहता है न कि इन मृगतृष्णाओं के पीछे भागने को।

(ख) 'प्रभुता' अर्थात स्वामित्व पाकर भी सब व्यर्थ है क्योंकि यह भी मृग-मरीचिका की भाँति केवल भ्रमित करती हैं। इसमें भी सत्य का अभाव है और सच्चा सुख नहीं है। अधिकार पाकर भी व्यक्ति का जीवन तो रिक्त ही रहता है।

(ग) 'चंद्रिका' अर्थात चाँदनी सुख का व्यंजक है। 'रात कृष्णा' काली रात अथवा दुख का व्यंजक है। चंद्रिका और रात-कृष्णा सुख-दुख के भी प्रतीक हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 40.

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

(क) 'छाया' शब्द किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है?

(ख) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ग) कविता की एक भाषागत विशेषता बताइए।

(घ) बीती यादों को कवि ने किन शब्दों से चित्रित किया है?

(ङ) 'क्षण' के लिए प्रयुक्त 'जीवित' विशेषण के सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

Answer:

(क) 'छाया' शब्द विगत जीवन की स्मृतियों के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

(ख) अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण है– सुरंग सुधियाँ सुहावनी।

(ग) कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ आधुनिक खड़ी बोली है।

(घ) बीती यादों को कवि ने छाया, चाँदनी, सुहानी यादों आदि के रूप में चित्रित किया है।

(ङ) 'क्षण' के लिए 'जीवित' विशेषण इसलिए प्रयुक्त किया गया क्योंकि वही क्षण हमारे समक्ष है, जिसमें हम जी रहे हैं अतः वही क्षण जीवित माना जा सकता है। बाकी क्षण तो शेष हो चुके अथवा आए ही नहीं हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in